पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2018-20 प्रकाशित: 01.11.2019 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

100/—रू का सहयोग

क्या आपने गत् 36 वर्ष में युवा उदघोष को सहयोग दिया है, इस बार दीपावली "युवा उद्घोष" के नाम कम से कम 100/— रू का सहयोग अवश्य प्रदान करें।

खाता सं. 20024363377
बैंक आफ महाराष्ट्र,
मुखर्जी नगर, दिल्ली,
कोड: IFSCode: MAHB0000901

वर्ष-36 अंक-11 कार्तिक-2076 दयानन्दाब्द 196 01 नवम्बर से 15 नवम्बर 2019 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 01.11.2019, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली के तत्वावधान में

136 वां महर्षि दयानन्द बलिदान दिवस दिल्ली हाट पीतमपुरा में सम्पन्न

महर्षि दयानन्द ने वैचारिक क्रान्ति का सूत्रपात किया -आर्य नेता अनिल आर्य

विधायक वन्दना कुमारी का स्वागत करते हुए उर्मिला आर्या,प्रवीन आर्या,अनिल आर्य व द्वितीय चित्र—भाजपा नेता रेखा गुप्ता का स्वागत करते हुए उर्मिला आर्या, उषा आहुजा, प्रवीन आर्या व गायत्री मीना।

नई दिल्ली। सोमवार 28 अक्तुबर 2019, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, नई दिल्ली के तत्वावधान में महान समाज सुधारक, आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का 136 वां बलिदान दिवस दिल्ली हाट, पीतमपुरा में सौल्लास सम्पन्न हुआ। समारोह में दिल्ली के कौने कौने से सैंकड़ों आर्य जनों ने पंहुच कर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। कार्यक्रम का शुभारम्भ 11 कुण्डीय यज्ञ के साथ हुआ, वैदिक विद्वान आचार्य गवेन्द्र शास्त्री ने यज्ञ सम्पन्न करवाया।

विधायक वन्दना कुमारी ने कहा कि महर्षि दयानन्द महान समाज सुधारक थे, उन्होंने समाज को एक नया चिन्तन व सोचने की दिशा प्रदान की, उनका बलिदान सदियों तक समाज का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। महर्षि दयानन्द ने नारी जाति के उत्थान व सामाजिक समरसता के लिए जो कार्य किया उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने कहा कि आज के भौतिकवादी युग में महर्षि दयानन्द की शिक्षायें भटकते लोगों को नया रास्ता दिखा सकती है उन्हें केवल जीवन में धारण करने की आवश्यकता है। उनके सिद्धान्त, आदर्श आज भी प्रासंगिक है तथा समाज को सही दिशा प्रदान करते हैं।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द महान क्रान्तिकारी थे, उन्होंने वैचारिक क्रान्ति को जन्म दिया व लोगों के सोचने व समझने की दिशा ही बदल डाली। महर्षि दयानन्द ने समाज में व्यापत पाखण्ड अन्धविश्वास पर सीधा प्रहार किया आज भी उनके विचार प्रांसगिक है और समाज को सोचने के लिये व चिन्तन करने के लिये विवश करते है। महर्षि दयानन्द से प्रेरणा पाकर हजारों नौजवान स्वतन्त्रता आन्दोलन में कूद पड़े जिससे देश आजाद हुआ। आज फिर से एक बार उनके कार्यो पर विचार कर जीवन में अपनाने की आवश्यकता है। भाजपा नेता रेखा गुप्ता ने कहा कि आर्य जन प्रान्तवाद व जातिवाद से उपर उठकर प्रत्येक मानव मात्र के लिए सेवा का कार्य करें व हिन्दु समाज को संगठित करने में भूमिका निभायें। हमें महर्षि दयानन्द के सन्देश को आम आदमी तक पहुंचाने का कार्य करना है जिससे धर्म का सही स्वरूप लोगों को पता चल सके।

गायक कलाकार नरेन्द्र आर्य "सुमन", प्रवीन आर्या व अंकित उपाध्याय के मधुर गोतों पर लोग झूम उठे। प्रमुख रूप से भाजपा नेता संजीव शर्मा, महामंत्री महेन्द्र भाई, विनोद गुप्ता, यशोवीर आर्य, सुरेन्द्र कोहली, रामकुमार आर्य, दुर्गेश आर्य, सुरेश आर्य, आर.पी.सूरी, पी.के. सचदेवा, राजेश मेहन्दीरता, धर्मपाल परमार, व्रतपाल भगत, डा. धर्मवीर आर्य, अमरसिंह सहरावत, प्रवीन आर्य (गाजियाबाद), उर्मिला आर्या, ओम सपरा, धर्मपाल आर्य, मनोज मान, पूर्व पार्षद ममता नागपाल, सुशील बाली, बहिन गायत्री मीना, यज्ञवीर चौहान, वेदप्रकाश आर्य, सुरेन्द्र गुप्ता, सौरभ गुप्ता, देवेन्द्र भगत, माधवसिंह आर्य, शिवम मिश्रा, राकेश आर्य, करूणा शर्मा, लायन प्रमोद सपरा, उषा आहुजा, अन्जु जावा, राजीव आर्य, गोपाल जैन, नरेन्द्र अरोड़ा, सन्तोष शास्त्री, भोपालसिंह आर्य, अमरनाथ बत्रा, रवि चड़डा, ओमप्रकाश गुप्ता, सोहनलाल आर्य, देवमित्र आर्य, स्वर्णा आर्या, के.एल.राणा, पुष्पा चुघ आदि उपस्थित थे।

इस अवसर पर आर्य समाज की कर्मठ 20 महिलाओं का "आर्य महिला रत्न" से अभिनन्दन किया गया। लगभग 800 आर्य जनों ने "ऋषि लंगर" का आनन्द लिया और एक नये उत्साह के साथ घरों को विदा हुए।

उल्लेखनीय है कि दीपावली के दिन 30 अक्तुबर 1883 को अजमेर में महर्षि दयानन्द सरस्वती का बलिदान हुआ था। उन्होंने गुजराती होते हुए भी हिन्दी भाषा में लिखा व प्रचार प्रसार किया।

महर्षि दयानन्द बलिदान दिवस पर दिल्ली हाट पीतमपुरा के खुले स्टेडियम में आर्य जनता का अपार जनसमुह।

ऋषि दयानन्द सदैव अमर रहेंगे

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

मनुष्य जीवन की प्रमुख आवश्यकताओं में शरीर का पालन व पोषण हैं। शरीर का पालन तो माता–पिता आदि परिवारजनों द्वारा मिलकर किया जाता हैं और पोषण माता–पिता आदि करते हैं और युवा होने व किसी व्यवसाय को करने पर मनुष्य व्यं धन अर्जित कर अपना और अपने परिवार का पोषण करता है। हमने अपने माता–पिता को देखा है। अब वह इस संसार में नहीं हैं। उनकी वर्षों पूर्व मृत्यु हो चुकी है। अपने पितामह और पितामही को हमने देखा नहीं क्योंकि हमारे जन्म से पूर्व हमारे पिता के बाल्यकाल व युवावस्था में, हमरे जन्म से पूर्व, वह दिवंगत हो चुके थे। इन सब लोगों में से कोई भी अमर नहीं है यद्यपि इन सबकी आत्मायें अमर हैं और कहीं न कहीं किसी योनि में अपने कर्मानुसार जन्म लेकर जीवनयापन कर रहीं है। संसार में कोई भी मनुष्य अपने परहित, देशहित, समाजहित, मानवता के हित सहित धर्म व संस्कृति की उन्नति के कार्यों को करके अमर व स्मरणीय होता है। राम, कृष्ण, ऋषि दयानन्द आदि ने परहित व देशहित सहित धर्म व संस्कृति के हित के कार्यों को किया था, अतः वह देश–देशान्तर में आज भी याद किये जाते हैं। हम अपने पूर्वज माता–पिता आदि को यदा–कदा उनका किसी प्रसंग में स्मरण आने पर ही उनके उपकारों को याद करते हैं और कुछ देर बाद व्यस्त होकर भूल जाते हैं। संसार में वह महापुरुष ही अमर होते हैं जो अपने देशवासी मनुष्यों के जीवन की किसी महत्वपूर्ण आवश्यकता को उन्हें प्रदान करते व कराते हैं जिससे समकालीन सन्तति सहित भावी पीढ़ियां भी निरन्तर लाभान्वित होती रहती हैं।

ऐसी ही एक वस्तु है जिसे धर्म कहते हैं। महर्षि दयानन्द ने हमारा हमसे परिचय कराने के साथ हमें हमारे सद्धर्म से भी परिचित कराया है। इससे पूर्व हमें अपना पूरा–पूरा परिचय विदित नहीं था। हम कौन हैं व थे, कहां से इस संसार में आते हैं, क्यों आते हैं, हमें कहा जाना हैं, हमारा लक्ष्य क्या है, लक्ष्य की प्राप्ति के उपाय क्या हैं, हम अपना आदर्श किसे बनायें आदि, ऐसे अनेक प्रश्न थे जिनका उत्तर तत्कालीन व पूर्ववर्ती लोगों को नहीं था। सद्धर्म अर्थात् मनुष्य के सत्य व श्रेष्ठ कर्तव्यों का सम्बन्ध न केवल व्यक्तियों के व्यक्तिगत कर्तव्य होते हैं अपितु इनका सम्बन्ध संसार के सभी मनुष्यों से है और प्रलय की अवस्था तक जितने भी मनुष्य उत्पन्न होंगे, उन सभी से रहेगा। सद्धर्म से हमें सुख मिलता है। यह सुख इस जन्म में भी मिलता है और मरने के बाद पुनर्जन्म होने तथा बाद के जन्मों तक मिलता जाता है। इस कारण से धर्म का महत्व है। महाभारत युद्ध के बाद देश व विश्व के सभी लोग यथार्थ सत्य धर्म को भूल चुके थे। इसके स्थान पर मत–पन्थ व सम्प्रदाय प्रचलित हो गये थे जो अविद्या व अन्धविश्वासों सहित मिथ्या परम्पराओं से भरे थे जिनसे मनुष्य का जीवन सुख से दूर व दुःखों से भर गया था। सद्धर्म की अनुपस्थिति में मनुष्य का परजन्म भी बिगड़ गया था जिसका कारण था कि इस जन्म में वह धर्म, अर्थ व काम व उसकी प्राप्ति के पवित्र साधनों से अपरिचित होकर धर्म के विरुद्ध कर्म करता था। ऋषि दयानन्द ने न केवल हमें हमारे धर्म व कर्तव्यों से ही परिचित कराया अपितु धर्म से होने वाले लाभों के विषय में भी बताया। धर्म से लाभ किस प्रकार होते हैं, इसका ज्ञान हमें ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का अध्ययन करने पर होता है। महर्षि दयानन्द की वेद से सम्बन्धित शिक्षायें मनुष्य को अज्ञान व अविद्या से हटाकर उसे वेदमार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है जो उसे जन्म व मरण के बन्धनों से मुक्ति दिलाकर मोक्ष को प्राप्त कराता है।

हमने ऋषि के जीवन पर विचार किया और पाया कि ऋषि दयानन्द ने अपने जीवन में मनुष्य जीवन की सर्वांगीण उन्नति के जो कार्य व तप किया है और जो सद्ज्ञान व सद्–मार्गदर्शन देश–देशान्तर के लोगों का उन्होंने अपने ग्रन्थों व उपदेशों के माध्यम से किया है, वह उन्हें प्रलय की अवस्था आने तक अमर व प्रसिद्ध रखेगा। आज के समाज की एक विडम्बना यह अनुभव होती है कि यह महापुरुषों का मूल्यांकन उनके ज्ञान व सत्यासत्य के आचरण सहित उनकी शिक्षाओं आदि के आधार पर नहीं करते अपितु सब बिना विचारे व सोचे समझे अपने–अपने मत व पन्थ के आचार्य व आचार्यों की बतायी गई किन्हीं बातों का ही आचरण करते हैं। उन्हें अपने मत के अतिरिक्त अन्य विद्वानों व महात्माओं की बातों व सन्देशों से कोई लेना–देना नहीं होता। देश व विश्व में अनेक मत–मतान्तर हैं जो अपने मत को अच्छा मानते हैं और दूसरों के मत को अपने मत से छोटा, अनुपयुक्त, अप्रांसगिक व अप्रशस्त मानते हैं। वह तुलनात्मक अध्ययन कर यह पता नहीं लगाते कि मनुष्य के लिये आवश्यक ज्ञान का वास्तविक आदि स्रोत कहां हैं और सृष्टि के आरम्भ में सत्य–ज्ञान कहां से किस प्रकार मनुष्यों को प्राप्त हुआ था? यदि वह पता लगाते तो उन्हें यह ज्ञात हो जाता है कि ईश्वर द्वारा सृष्टि केआरम्भ में चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा को दिया गया ज्ञान चार वेद ही सच्चे ज्ञान के आदि स्रोत है। इस वेदज्ञान में कोई मनुष्य व आचार्य किसी प्रकार की वृद्धि नहीं कर सकता। सब अपनी–अपनी योग्यता के अनुसार उनकी सत्य व असत्य व्याख्यायें तो कर सकते हैं परन्तु उसमें किसी सत्य मान्यता की वृद्धि कोई नहीं कर सकता। ईश्वर के ज्ञान वेद का सत्यस्वरूप व सत्य व्याख्यायें ही मनुष्य का धर्म हुआ करती हैं। यह व्याख्या भी सभी मनुष्य नहीं कर सकते।

वेदों की व्याख्या व वेदों के सत्य अर्थ जानने व प्रचार करने के लिये योग्य गुरु से विद्यार्जन करने के साथ अपने जीवन को ऋषि–मुनि विद्वानों की संगति कर योगाभ्यास द्वारा ईश्वर का साक्षात्कार करना होता है। ईश्वर साक्षात्कार कर ही मनुष्य में सत्य के प्रचार और असत्य के खण्डन की शक्ति उत्पन्न होती है जिससे मनुष्य, समाज व देश का कल्याण होता है। यही कार्य महर्षि दयानन्द ने किया है। महर्षि दयानन्द ने अपना पूरा जीवन और यहां तक की अपनी अन्तिम श्वास भी देश, धर्म, संस्कृति, परहित व समाज हित सहित समाज सुधार के लिये अर्पित की है। उन्होंने समाज हित व समाज सुधार के जो कार्य किये, उसमें उनका अपना निजी लाभ का कुछ प्रयोजन न था। वह महापुरुष बनने व अपनी पूजा कराने के लिये ऐसा नहीं कर रहे थे अपितु वह संसार के सभी लोगों को ईश्वर का सच्चा परिचय देकर उसका भक्त बनाकर उन्हें ईश्वर सहित आत्मा का साक्षात्कार कराना चाहते थे। इस कार्य में वह आंशिक रूप से ही सफल हो पाये। विज्ञान जगत में कोई वैज्ञानिक यदि कोई आविष्कार करता है तो उसे अपने उस आविष्कार का जन–जन में जाकर प्रचार नहीं करना पड़ता। उसके आविष्कार व कार्य को सभी देश–देशान्तर के लोग पुस्तकों में पढ़कर व उसके व्याख्यानों को सुनकर अपना लेते हैं। इसके विपरीत सत्य धर्म के प्रचार में अनेक बाधायें हैं। प्रचलित अविद्यायुक्त मत–मतान्तर के लोग किसी सच्चे वैदिक धर्म प्रचारक की सच्ची बातों का भी विरोध करते हैं और अपनी कुछ वर्ष पुरानी परम्पराओं की सत्यता की परीक्षा करने के लिये भी सहमत नहीं होते। इसका परिणाम यह होता है कि मत–मतान्तरवादी लोग सच्चे महात्माओं द्वारा प्रचारित सत्य ज्ञान से तो वंचित होते ही हैं, इसके साथ वह भावी पीढ़ियों को भी उससे वंचित कर देते हैं। इसी कारण से वेदों का जितना प्रचार व प्रसार विश्व में होना चाहिये था वह नहीं हो सका है।

एक पक्ष यह भी सामने आता है कि सत्य धर्म का प्रचार ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में किया था। वही संसार का स्वामी व अधिष्ठाता है। वह लोगों के हृदय व आत्माओं के भीतर भी विराजमान है। वह यदि उन सबको प्रेरणा कर दे तो सभी उसको स्वीकार कर सकते हैं। इसका भी हमारे ऋषियों ने अध्ययन व विवेचन किया है और बताया है कि जिस मनुष्य का मन कुवासनाओं व अविद्या आदि दोषों से युक्त होता है, वहां ईश्वर की प्रेरणा होने पर भी उसका आत्मा पर प्रभाव नहीं होता। यह ऐसा ही है कि जैसा कि किसी दर्पण पर धूल मिट्टी जमी हो तो उसमें हमें अपना चेहरा दिखाई नहीं देता। अपना चेहरा देखने के लिए धूल व मिट्टी को साफ करना होता है। इसी प्रकार से हमें अपने मन, हृदय व आत्मा को शुद्ध व पवित्र बनाना होगा तभी हम ईश्वर की प्रेरणाओं को ग्रहण कर सकेंगे। इस कार्य के लिये ही धर्माचरण अथवा योगाभ्यास आदि करना होता है। ऋषि दयानन्द ने योग को अपने जीवन में चरितार्थ किया था। वह आसन में बैठकर प्राणायाम आरम्भ करते थे और कुछ ही क्षणों में उनकी समाधि लग लाती थी और उन्हें ईश्वर का साक्षात्कार हो जाता था। यही कारण था कि उन्होंने उस लाभ को देश व विश्व की समस्त जनता तक पहुंचाने के लिये वेद प्रचार यज्ञ व अनुष्ठान को अपनाया था। आज उनके न होने पर भी उनका रचा गया साहित्य सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय, पंचमहायज्ञविधि, व्यवहारभानु, गोकरुणानिधि आदि ग्रन्थ देश देशान्तर के लोगों का मार्गदर्शन कर रहे हैं। इन ग्रन्थों ने ही हमें स्वामी श्रद्धानन्द, पं0 लेखराम, पं0 गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज, स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती, पं0 गणपति शर्मा, महाशय राजपाल, पं0 रामप्रसाद बिस्मिल, डा0 रामनाथ वेदालंकार आदि विद्वान व देशभक्त विद्वान दिये हैं जिन्होंने वेदों के सन्देश को सर्वत्र प्रसारित व बढ़ाने का कार्य किया है।

महर्षि दयानन्द जी ने जो साहित्य हमें दिया है उससे एक आदर्श मनुष्य का निर्माण करना सम्भव है। इसके क्रियान्वयन से राम, कृष्ण, महात्मा भरत, महात्मा युधिष्ठिर, विदुर, कर्ण, गुरु वशिष्ठ, गुरु विश्वामित्र आदि हमें बहुतायत में प्राप्त हो सकते हैं। आवश्यकता केवल ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का अध्ययन करने, उसे समझने व उसका मन–वचन–कर्म से आचरण करने की है। आदर्श गुरुओं से पढ़कर और वेदाचरण कर ही राम व कृष्ण महापुरुष बने थे। ऋषि दयानन्द का निर्माण भी आदर्श गुरु स्वामी विरजानन्द सरस्वती व उनके योग के गुरुओं की शिक्षा से हुआ था। ऋषि दयानन्द का सम्पूर्ण मनुष्य जाति पर महान उपकार है। उन्होंने विलुप्त वैदिक ज्ञान जिसमें दर्शन, उपनिषद, मनुस्मृति आदि ग्रन्थ सम्मिलित हैं, उनको उपलब्ध कराया और हमें वह कसौटी दी जिससे हम सत्य और असत्य के भेद को जान सकते हैं और सत्यासत्य में से सत्य और असत्य को पृथक कर सकते हैं। हम आशा करते हैं कि ऋषि दयानन्द ने जो महान कार्य किये हैं उसके कारण वह इस सृष्टि की प्रलय अवस्था तक अमर रहेंगे अर्थात् उनका यश व कीर्ति चिरस्थाई होंगे।

—196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः 09412985121

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की बैठक

परिषद् की राष्ट्रीय कार्यकारिणी व अन्तरंग सभा की बैठक शनिवार, 9 नवम्बर 2019 को प्रातः 11 बजे, स्थानः सार्वदेशिक सभा,महर्षि दयानन्द भवन,आसिफ अली रोड़,नई दिल्ली में बुलाई गई है। बैठक में अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन–2020 व 251 कुण्डीय यज्ञ की व्यापक तैयारी पर विचार किया जायेगा। कृपया सभी साथी समय पर पहुंचें। प्रीति भोजः दोपहर– 2 बजे।

—अनिल आर्य राष्ट्रीय अध्यक्ष — महेन्द्र भाई, महामंत्री

144 वीं जयन्ती पर ''राष्ट्रीय अखण्डता यज्ञ'' द्वारा सरदार पटेल को दी श्रद्धाजंलि

राष्ट्र को संगठित करने में सरदार पटेल का अमूल्य योगदान–आर्य नेता अनिल आर्य,राष्ट्रीय अध्यक्ष

नई दिल्ली के जंतर–मंतर पर राष्ट्रीय अखण्डा यज्ञ करते हुए केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्यकर्त्ता

वीरवार, 31 अक्तुबर 2019,केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली के तत्वावधान में 144 वीं ''सरदार पटेल जयन्ती'' के अवसर पर नई दिल्ली के ''जन्तर मन्तर'' पर परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य के नेतृत्व में ''राष्ट्रीय अखण्डता यज्ञ'' का आयोजन कर स्वतन्त्र भारत के महान शिल्पीकार सरदार वल्लभभाई पटेल को श्रद्धांजलि अर्पित की गई । इस अवसर पर सैंकड़ों आर्य समाजियों ने देश की एकता व अखण्डता की रक्षा का संकल्प लिया और वह नारे लगा रहे थे ''सरदार पटेल का योगदान,याद रखेगा हिन्दुस्तान'' केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि भारत विभाजन के लिये सरदार पटेल नहीं अपितु जिन्ना जिम्मेदार थे । उन्होंने कहा कि सरदार पटेल आधुनिक भारत की एकता व अखण्ड भारत निर्माण के महान शिल्पीकार थे जिन्होंने 565 से अधिक रियासतों को इक्टठा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी राष्ट्र उनके ऋण से कभी उऋण नहीं हो सकता । उन्होंने गुजरात में मोदी सरकार द्वारा बनवाये गये कीर्ति स्तम्भ व मूर्ति के लिये बधाई दी। अनिल आर्य ने भारतीय सेना के द्वारा पाक सेना को मजबूती से कड़ा जवाब देने पर भी बधाई देते हुए कहा कि पहले की सरकारों ने सेना के हाथ बांध रखे थे। आज हमें सरदार पटेल से प्रेरणा लेकर राष्ट्रीय एकता–अखण्डता को मजबूत बनाने का संकल्प लेना है। परिषद् के महामंत्री महेन्द्र भाई ने कहा कि जब यह स्पष्ट हो चुका है कि भारत में आंतकवादी गतिविधियों में व कश्मीर में अलगाववाद के पीछे पाकिस्तान प्रायोजित आंतकवाद का हाथ है,अतः केन्द्र सरकार से अनुरोध है कि अब पाकिस्तान को उसकी भाषा में कठोरता से जवाब दिया जाये और पाक अधिकृत कश्मीर वापिस लिया जाये। समय की मांग है कि सरकार आंतकवादियों व उनके संरक्षकों को सख्ती से कुचले, देश के आत्मसम्मान की कीमत पर कोई समझौता नहीं हो सकता। कार्यक्रम का शुभारम्भ आचार्य गवेन्द्र शास्त्री ने ''राष्ट्रीय अखण्डता यज्ञ'' द्वारा किया। उन्होंने भारतीय सेना के शौर्य की प्रशंसा करते हुए उन्हें पाकिस्तान को मुँह तोड़ जवाब देने के लिये बधाई दी,उन्होंने कहा कि यदि सरदार पटेल न होते तो भारत संगठित न होता।

परिषद् के प्रदेश संचालक रामकुमारसिंह आर्य ने कहा कि देश विभाजन के लिये जिन्ना और नेहरू जिम्मेदार थे सरदार पटेल ने तो देश को जोड़ने का कार्य किया। आर्य नेता प्रवीन आर्य(गाजियाबाद) ने सरदार पटेल के महान व्यक्तित्व का परिचय नयी युवा पीढ़ी को करवाने के लिये पाठ्य पुस्तकों में उनकी जीवनी को विशेष स्थान देने की मांग की। प्रवीन आर्या व सुषमा शर्मा ने देश भक्ति पूर्ण गीत सुनाये। आर्य नेता प्रेमकुमार सचदेवा,कै.अशोक गुलाटी,यज्ञवीर चौहान,के.एल.राणा,प्रदेश महामंत्री अरूण आर्य,सुदेश भगत,विनीत आहुजा,उदितराज,प्रमोद चौधरी,माता नारायणी देवी आदि ने भी अपने विचार रखे । प्रधानमन्त्री व गृहमंत्री के नाम ज्ञापन भी दिया गया ।

यज्ञ के ब्रहमा आचार्य गवेन्द्र शास्त्री व संचालन करते अनिल आर्य व द्वितीय चित्र में–गायक कलाकार प्रवीन आर्या, अंकित उपाध्याय व नरेन्द्र आर्य 'सुमन' का स्वागत करते उर्मिला आर्या,दुर्गेश आर्य व रामकुमार आर्य।

''आर्य महिला रत्न'' सम्मान से सम्मानित श्रीमती सुशील ठुकराल(पीतमपुरा) व द्वितीय चित्र–श्रीमती इन्द्रा वत्स(प्रशान्त विहार) को सम्मानित करते भाजपा नेता रेखा गुप्ता।

भाजपा प्रदेश मंत्री संजीव शर्मा का स्वागत करते आचार्य गवेन्द्र शास्त्री,सुरेश आर्य,रामकुमार आर्य,अनिल आर्य व दुर्गेश आर्य । द्वितीय चित्र–यज्ञ का सुन्दर द्रश्य ।

श्रीमती अनुराधा चड्डा (आर्य समाज,पूर्वी पंजाबी बाग) का अभिनन्दन करते अनिल आर्य,रवि चड्डा व प्रवीन आर्या। द्वितीय चित्र–श्रीमती नीरू कपूर (आर्य समाज,पंजाबी बाग विस्तार) के अभिनन्दन कासुन्दर द्रश्य।

श्रीमती सुनीता आर्या(आर्य समाज,नगर शाहदरा) व श्रीमती पुष्पा सक्सेना(आर्य समाज,अशोक विहार,फेज–1) के अभिनन्दन का सुन्दर द्रश्य।

डा.धर्मवीर आर्य (प्रधान, आर्य समाज, विशाखा एनक्लेव), श्री व्रतपाल भगत (प्रधान, आर्य समाज, पीतमपुरा) व श्री धर्मपाल परमार(प्रधान,आर्य समाज,प्रशान्त विहार) के अभिनन्दन का सुन्दर द्रश्य।

समाजसेवी श्री सुरेन्द्र कोहली व श्रीमती सुप्रिया कपूर(लाजपत नगर) का अभिनन्दन करते राजीव आर्य,ओम सपरा,अजय कपूर व प्रमोद सपरा।

श्रीमती पुष्पा मदान(बाहरी रिंग रोड विकासपुरी),श्रीमती सुदेश आहुजा(सुन्दर विहार) व रेणु त्यागी के अभिनन्दन का सुन्दर द्रश्य।

दानदाताओं से अपीलः

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु खाता संख्या **10205148690** स्टेट बैंक आफ इण्डिया, घन्टाघर, दिल्ली–**110007**, आई. एफ. एस.कोड - **SBIN0001280** पर सीधे भेज कर हमें फोन न. **9868051444** पर एस.एम.एस कर दें जिससे रसीद भेजी जा सके। अग्रिम धन्यवाद सहित। – अनिल आर्य

शोक समाचारः विनम्र श्रद्धांजलि

1. स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी (प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश) का निधन।
2. श्री मदनमोहन मल्होत्रा (आर्य समाज, करोल बाग) का निधन।
3. श्री वरूण कथुरिया (पौत्र प्रकाश कथुरिया, कीर्ति नगर) का निधन।
4. श्रीमती सावित्री गुप्ता (प्रीतमपुरा) का निधन।
5. श्री हारूण रसीद (भ्राता रागीब राजा मंयक प्रिन्टर्स) का निधन।
6. श्रीमती सुशीला देवी (धर्मपत्नि ओमप्रकाश रमन, करनाल) का निधन।
7. श्रीमती श्रद्धायति जी (धर्मपत्नि श्री प्रज्ञानमुनि, करनाल) का निधन।

सम्पादकः **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**, 2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी–176–177, कबीर बस्ती, दिल्ली–7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970